अन्तरधार्मिक परिसम्वाद सम्बन्धी
परमधर्मपीठीय विभाग

हिंदू और ईसाई: विविधता के बीच और भिन्नताओं के बावजूद सद्भाव को बढ़ावा दें

दीपावली सन्देश 2024

वाटिकन सिटी

प्रिय मित्रो,

परमधर्मपीठीय अन्तरधार्मिक परिसम्वाद सम्बन्धी विभाग आपको इस वर्ष 31 अक्टूबर को मनाये जा रहे प्रकाश के पर्व दीपावली के अवसर पर अपनी आनन्दमयी एवं प्रार्थनापूर्ण हार्दिक शुभकामनाएं अर्पित करता है। प्रकाश का स्रोत ईश्वर आपके मन और हृदय को शांति एवं हर्ष से भर दें तथा आपके परिवारों और समुदायों को अनुग्रह और आननद से परिपूर्ण कर दें!

पहले से कहीं अधिक हमारे शहर और देश अधिकाधिक विविध होते जा रहे हैं। दुनिया के लगभग हर भाग में अलग-अलग संस्कृतियों, धर्मों, जातियों, भाषाओं और विचारधाराओं के लोग, या तो अपनी पसंद से या फिर संयोग से, एक-दूसरे के अगल-बगल में जीवन-यापन करते हैं। अधिकांश लोगों द्वारा यह विविधता पारस्परिक विकास, शिक्षा और समृद्धि के एक बेहतरीन स्रोत के रूप में देखा जाता है। साथ ही, विश्व के कुछ भागों में इसे अस्वीकार भी किया जाता है क्योंकि इसे सद्भाव के लिए संभावित ख़तरा माना जाता है जो टकराव की ओर भी ले जा सकता है। इस विषय को लेकर चिंतित होने के कारण, हम आपके साथ कुछ विचार साझा करना चाहेंगे कि कैसे ईसाई और हिंदू दोनों, विविधता के समक्ष और भिन्नताओं के बावजूद सद्भाव को बढ़ावा दे सकते हैं।

सम्पूर्ण इतिहास में मानव प्राणियों ने सदैव सद्भावनापूर्ण जीवन यापन करने में कठिनाइयों का अनुभव किया है। वास्तव में, ऐसा तब-तब हुआ है जब-जब लोगों के बीच विविधता और भिन्नताएं रही हैं जो कभी-कभी शत्रुता और सूक्ष्म प्रतिरोध दोनों रूपों में प्रदर्शित हुई हैं। फिर भी जैसा कि संत पापा फ्राँसिस ने कहा है, "इतिहास की गतिशीलता में और जातीय समूहों, समाजों और संस्कृतियों की विविधता में हम एक दूसरे को स्वीकार और देखभाल करनेवाले भाइयों और बहनों से बने एक समुदाय के निर्माण हेतु दैवीय बुलाहट के बीजों को देखते हैं" (देखिएः संत पापा फ्राँसिस का विश्व पत्र फ्रातेल्ली तूती, संख्या 96, 3 अक्टूबर 2020)। विविधता, इसीलिये, सद्भाव निर्माण हेतु प्रयासों का आह्वान करती है। इसके अतिरिक्त, सद्भाव के बीज केवल विविधता के सम्मान से पनप सकते हैं जहाँ सभी को उन्नति और सामाजिक एकीकरण के अवसर प्रदान किये जाते हों (उक्त संख्या 220)।

ईश्वरीय परियोजना में विविधता और भिन्नताएं किसी के अस्तित्व के लिए ख़तरा नहीं हैं अपितु सामंजस्यपूर्ण सह-अस्तित्व के लिए उपहार हैं। वे एक बहुरूपी भवन के संबंधपरक मोज़ेक हैं जिसमें सभी रंगों, पंथों और संस्कृतियों के लोग एक साथ रह सकते हैं। इसके अलावा, वे बहुरूपी अभिव्यक्तियों में हमारी सामान्य मानवता को प्रदर्शित करती हैं। वे हमें समृद्ध करते हैं और विविधता का सम्मान करते हैं।

दुर्भाग्यवश, स्वयं ईश्वर की शक्ति से और विविधता में तथा विविधता के द्वारा सद्भाव को बढ़ावा देने की दिव्य दृष्टि को व्यक्तिगत और सामूहिक दोनों स्तरों पर उन विचारधाराओं द्वारा प्रतिस्थापित किया जा रहा है जो बहिष्कार, भेदभाव और अनुरूपता का समर्थन करती हैं। दुनिया के विभिन्न भागों में धार्मिक कट्टरवाद, उग्रवाद, अंधाधुन्धता, नस्लवाद और अति राष्ट्रवाद ऐसी विचारधाराओं के कुछ उदाहरण हैं जो सद्भाव को नष्ट करते हैं और लोगों के बीच संदेह, पूर्वाग्रह, अविश्वास, घृणा और भय को बढ़ावा देते हैं और इस प्रकार उन्हें मानवीय भाईचारे और सामाजिक मैत्री बनाए रखने वाले बंधन बनाने से बाधित करते हैं।

पहले से कहीं अधिक आज मानवता के लिए ईश्वरीय योजना को पुनः खोजने और हमारे समुदायों, शहरों और देशों में भाईचारे की भावना को, जो प्रत्येक को ईश्वर की संतान तथा भाई-बहन के रूप में एक साथ बांधती है, पोषित करने की आवश्यकता है। परिणामस्वरूप, हम सम्बन्धों का निर्माण कर सकेंगे और सभी प्रकार के नैतिक, आर्थिक और सामाजिक संकटों तथा सद्भावना विहीनता को पराजित कर सकेंगे (दे. सन्त पापा फ्रांसिस का संबोधन, अधिकारियों, नागर समाज और राजनयिक कोर के साथ बैठक, जकार्ता, इंडोनेशिया, 4 सितंबर 2024)।

विविधता के बीच और भिन्नताओं के बावजूद सद्भाव के बीज बोना एक व्यावहारिक आवश्यकता है जो सभी व्यक्तियों, परिवारों, शैक्षणिक संस्थानों, मीडिया, समुदायों और राष्ट्रों से ठोस कार्रवाई और सामूहिक प्रयास की मांग करती है। सभी को रूढ़िवादिता को तोड़ने तथा सहानुभूति, संवेदनशीलता और उन लोगों के प्रति सम्मान को बढ़ावा देने की दिशा में काम करने की आवश्यकता है जो हमसे अलग हैं। विविधता और भिन्नता की समृद्धि के बारे में अधिक जागरूकता, समझ और उनकी सराहना के लिए सभी स्तरों पर संवाद को प्रोत्साहित करने की भी आवश्यकता है। समाज में सद्भाव के लिए अनुकूल परिस्थितियों के निर्माण हेतु धर्मों में अपार क्षमता है, अतः सभी धार्मिक नेताओं का यह पावन कर्तव्य है कि वे अपने अनुयायियों को सद्भाव के लिये प्रयासरत रहने का प्रोत्साहन दें।

अपनी-अपनी धार्मिक परम्पराओं में आस्था रखने वाले तथा समाज में सामंजस्यपूर्ण सह-अस्तित्व को दृढ़ करने के वास्ते साझा प्रतिबद्धता रखनेवाले व्यक्तियों के रूप में, आइए हम ईसाई और हिंदू, अन्य धार्मिक परम्पराओं के लोगों तथा समस्त शुभचिन्तकों के साथ हाथ मिलाते हुए, व्यक्तिगत और सामूहिक रूप से, विविधता के बीच और भिन्नताओं के बावजूद सद्भाव को बढ़ावा देने के लिए "ज़िम्मेदारी तथा भाईचारे और समावेशिता की भावना के साथ" (सन्त पापा फ्रांसिस, संबोधन, अधिकारियों, नागर समाज और राजनयिक कोर के साथ बैठक, सिंगापुर के राष्ट्रीय विश्वविद्यालय के सांस्कृतिक केंद्र का रंगमंच, 12 सितंबर 2024) वह सब कुछ करें जो हम कर सकते हैं।

पुनः हम आपको दीपावली के आनंदमय उत्सव की शुभकामनाएं देते हैं!

कार्डिनल मिगेल आन्गेल अयुसो गिक्सो, एमसीसीजे
प्रीफेक्ट

मोन्सिन्ज्ञोर इन्दुनिल कोडिथुवाक्कु जनकरतने कंगनमलगे
सचिव

DICASTERY FOR INTERRELIGIOUS DIALOGUE
00120 Vatican City

Tel: +39.06.6988 4321
Fax: +39.06.6988 4494

E-mail: dialogo@interrel.va
http://www.dicasteryinterreligious.va